IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माधवी : एक विडम्बना

डॉ0 जया
एसोसिएट प्रोफेसर : हिन्दी–विभाग
मुन्नालाल एवं जयनारायण खेमका कन्या
महाविद्यालय, सहारनपुर।
(उत्तर प्रदेश) 247001

आदिम युग से यांत्रिक युग तक की दीर्घ यात्रा में मानव जाति ने कई उतार–चढ़ाव देखे हैं। वर्तमान समय में समाज और साहित्य में विभिन्न विमर्श चर्चा के केन्द्र में हैं; जिनमें से स्त्री विमर्श दीर्घावधि तक चिंतन का विषय रहा है। हम स्त्रियों की महानता के प्रशस्ति–गान में इतना डूब गए कि उसकी भावनात्मक सामर्थ्य पर अतिरिक्त भार वहन करने का उत्तरदायित्व लाद दिया। अपनी अपेक्षाओं के अतिरेक में समाज भूल गया कि स्त्री भी मनुष्य है। मनुष्य का स्वभाव है स्पर्धा करना, वह दूसरे से आगे रहने के लिए प्रयासरत रहता है और इसमें कुछ अनुचित भी नहों परन्तु स्पर्धा में पीछे रह जाना उसे स्वीकार्य नहीं होता, इससे उसका अभिमान आहत होता है। किसी भी प्रकार सफलता प्राप्त करके वह प्रशंसा पाने का आकांक्षी रहता है, ऐसे में कई अवसरों पर अपनी स्वार्थ–सिद्धि में वह दूसरों की भावनाओं, संवेदनाओं व विचारों को अनदेखा कर उन्हें अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का निमित्त मात्र समझ लेता है।

स्त्रियों से सभी सम्बन्धों का मान रखने की अपेक्षा की जाती है– पिता, पति, प्रेमी, भाई, संतान अक्सर उसकी कर्तव्य निष्ठा को भुनाने में लगे रहते हैं। 'माधवी' पुराणों से लिया गया मिथकीय पात्र है, वह पूर्वकाल में थी या नहीं, यह तो इतिहास का विषय है परन्तु उसका चरित्र यथार्थतः प्रासंगिक है इसमें किसी को संदेह नहीं होना चाहिए। पिता, जो कि अपनी दानवीरता की प्रशंसा सुनने के अभ्यस्त हैं उनके द्वारा गालव को सौंप दिये जाने पर माधवी स्वयं को दान में दिये जाने पर आश्चर्य व्यक्त करती है किन्तु विरोध में दृढ़ता नहीं दिखायी देती। सम्भवतः युगों से स्त्री को इसी प्रकार संस्कारित किया गया है कि आज्ञा उसके लिए शिरोधार्य हों। गालव, ऐसा नवयुवक जो कि स्वयं हठ करके गुरू दक्षिणा देने की प्रतिज्ञा तो कर लेता है परन्तु उसे पूरा करने में स्वयं को असमर्थ अनुभव करता है। माधवी उसकी प्रतिज्ञा पूरी करने का माध्यम मात्र ही बनकर रह जाती है, गालव के प्रति उसका प्रेम अंततः एकपक्षीय प्रमाणित होता है ''जब तुम मेरे सामने अनुनय–विनय कर रहे थे तब भी तुम झूठ बोल रहे थे। तुमने केवल एक ही व्यक्ति से प्रेम किया है और वह अपने आपसे।''[1] ययाति, गालव, पुत्र पाने के अभिलाषी तीनों राजा–सभी अपने स्वार्थों में आंकठ डूबे हैं, इतने कि किसी को भी माधवी की पीड़ा अनुभव नहीं होती। माधवी का सत्य किसी स्थान या समय–सीमा में आबद्ध नहीं अपितु सार्वभौमिक व प्रासंगिक है।

'माधवी' सन् 1984 में भीष्म साहनी द्वारा लिखा गया नाटक है, जिसकी कथा 'महाभारत' से प्रेरित है। ऋषि विश्वामित्र के शिष्य गालव की शिक्षा समाप्त हुई है और वह हठ करता है गुरू–दक्षिणा देने का। विश्वामित्र उसके दंभ को नष्ट करने के लिए, गुरू–दक्षिणा में आठ सौ अश्वमेधी घोड़े देने को कहते हैं। कुछ समय प्रयास करने के पश्चात् गालव इसे असंभव मानकर अपनी विवशता के कारण आत्महत्या करने के लिए उद्यत होता है तब भगवान विष्णु के आदेश पर गरूड़देव उन्हें महाराज ययाति के पास जाने का सुझाव देते हैं। ययाति दानवीर राजा रहे हैं परन्तु राज–पाट त्यागकर अब वह आश्रमवासी हो गए हैं, अतः प्रारम्भ में वह गालव के समक्ष स्वयं को उसकी सहायता करने में अक्षम बताते हैं परन्तु तत्पश्चात अपनी पुत्री माधवी को उसकी प्रतिज्ञा पूरी करने हेतु सौंप देते हैं। माधवी से उत्पन्न पुत्र चक्रवर्ती राजा बनेगा, ऐसा उसके भाग्य में लिखा है। इसके साथ ही उसे चिर कौमार्य का वरदान भी प्राप्त

है, संतान को जन्म देने के पश्चात् अनुष्ठान करने पर वह पुनः कौमार्य प्राप्त करने में समर्थ है। ययाति का विचार है कि उसकी इन विशेषताओं के कारण कोई भी राजा सहज ही उससे विवाह कर आठ सौ अश्वमेधी घोड़े देने को तत्पर हो जाएगा। गालव, माधवी को लेकर अयोध्या के राजा हर्यश्च के पास जाता है परन्तु उसे मात्र दो सौ अश्वमेधी घोड़े ही प्राप्त होते हैं, शेष घोड़ों को प्राप्त करने के लिए गालव को काशी नरेश दिवोदास व भोजनगर के राजा उशीनर के रनिवास में भी भेजता है। इस प्रकार छः सौ घोड़े प्राप्त होते हैं किन्तु दो सौ घोड़ों की अभी भी आवश्यकता है। सूचना मिलती है कि अब किसी राजा के पास घोड़े नहीं हैं, अतः गालव की प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए माधवी ऋषि विश्वामित्र के आश्रम में जाकर, उनसे स्वयं को रखने का प्रस्ताव रखती है। नाटक के अंत में जहां एक ओर ययाति, माधवी का स्वयंवर रचा रहे हैं, वहीं दूसरी ओर गालव के दीक्षांत समारोह का आयोजन हो रहा है। अनुष्ठान न करने के कारण माधवी प्रौढ़ रूप में दिखायी देती है, जिससे गालव निराश होकर उसका विवाह–प्रस्ताव स्वीकार करने में झिझकता है। माधवी सब कुछ त्यागकर चली जाती है और गालव का दीक्षांत समारोह का आरंभ होता है।

यह नाटक तीन अंकों में विभाजित है, पहले व तीसरे अंक में तीन–तीन तथा दूसरे अंक में चार दृश्यों में कथावस्तु को प्रस्तुत किया गया है। पात्र–संयोजना की दृष्टि से यह नाटक उल्लेखनीय है किन्तु माधवी का चरित्र ही इसके केन्द्र में है। गालव की प्रतिज्ञा पूरी करने का माध्यम मात्र बन गई है माधवी, उसके पिता ययाति भी उसे ''यज्ञ में दी जाने वाली आहुति''[2] कहते हैं। ययाति को न तो गालव की गुरू–दक्षिणा की प्रतिज्ञा से विशेष सरोकार है और न ही, अपनी पुत्री के मान–सम्मान की चिन्ता। वह गालव को अपनी पुत्री उसकी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए, सौंप देते हैं क्योंकि उन्हें राज–काज त्यागने के पश्चात भी अपनी दानवीरता की प्रशंसा सुनने का लोभ है।''[3] ''मैंने सदा अपनी सामर्थ्य से बढ़कर दान दिया है''[4] इसकी पुष्टि करता है। आश्रमवासी के कहने पर कि .....''आपने यश की लालसा से ऐसा किया है, ताकि लोग कहें कि वनों में रहते हुए भी ययाति दानवीर है, अपनी एकमात्र कन्या को भी दान में दे सकता है।''[5] ययाति अपने इस कृत्य को कर्तव्य और धर्म कहते हैं। एक स्त्री की विडम्बना है कि उसका अपनी देह पर भी अधिकार छीन लिया गया, वह निराश होकर स्वयं को ''गुरू–दक्षिणा का निमित्त मात्र''[6] कहती है।

स्त्री को ही संयम और मर्यादा की शिक्षा दी जाती रही है। माधवी को एक वस्तु के समान, ययाति गालव को सौंप देते हैं। माधवी भी अपने कर्तव्य का सम्पादन करने को विवश है, वह गालव से प्रेम करती है, गालव के हृदय में भी उसके प्रति कोमल भावनाएँ हैं परन्तु उसकी सर्वोच्च प्राथमिकता गुरू–दक्षिणा देने की प्रतिज्ञा को पूर्ण करना है, वस्तुतः यह भी उसके अहं का तुष्टिकरण ही है। वह स्वयं आठ सौ अश्वमेधी घोड़े जुटाने में सक्षम नहीं है, इसका निमित्त माधवी को बनाता है परन्तु बिना उसे श्रेय दिए क्योंकि ''धर्म ग्रन्थों में, स्त्री की तुलना पृथ्वी के साथ की गयी है। जिस भाँति पृथ्वी संसार–भर का बोझ वहन करती है, वैसे ही स्त्री सभी दायित्वों का भार वहन करती है, उसकी शक्ति सेवा में है। पुरूष महत्वाकांक्षी होता है, पर स्त्री का प्रमुख गुण त्याग है, सेवा है।''[7]

माधवी और गालव जब राजा हर्यश्च के राज्य में पहुँचते हैं तो उनका यह कहना कि '' अब राजकुमारियों जैसा दर्प तुम्हें नहीं सुहाता, दान में दी हुई युवती में अकड़ किस बात की''[8] जैसे रूक्ष शब्दों को वह किसी प्रकार सहन कर लेती है परन्तु तत्पश्चात् ज्योतिषी द्वारा राजा के समक्ष उसका नख–शिख परीक्षण कर, इस बात की पुष्टि करना कि वह चक्रवर्ती राजा को जन्म देगी, प्रसंग ऐसा प्रतीत होता है जैसे किसी पशु या वस्तु को क्रय करने से पूर्व उपभोक्ता पूर्णतः संतुष्ट होना चाहता है कि कहीं वह घाटे का व्यापार तो नहीं कर रहा ? और यहाँ तो दो सौ अश्वमेधी घोड़ों का प्रश्न है; एक स्त्री की इच्छा, अस्मिता व देह का मूल्य दो सौ अश्वमेधी घोड़ों से अधिक तो नहीं होता ? काशी–नरेश दिवोदास निलज्जता से कहते हैं'' स्त्रियाँ श्रृंगार तो बहुत करती हैं, पर काम–क्रीड़ा नहीं जानतीं।''[9] वृद्ध राजा उशीनर भी ऐसे पुत्र को पाने का लोभ संवरण नहीं कर पाते जो कालांतर में चक्रवर्ती राजा बनेगा। एक के बाद एक, तीन राजाओं के रनिवास में रहकर पुत्रों को जन्म देना, प्रसव के बाद अनुष्ठान कर पुनः कौमार्य प्राप्त करना, यह वरदान माधवी के लिए अभिशाप सिद्ध हुआ लेकिन गालव और ययाति के लिए वरदान। परन्तु इतना सरल नहीं था माधवी के लिए सब कुछ सहन करना, उसने गालव के प्रति प्रेम और पिता ययाति के प्रति कर्तव्य पूरा करते हुए मात्र अपनी देह को ही निमित्त नहीं बनाया, बल्कि दाँव पर लगा दिया अपना आत्म–सम्मान व मातृत्व। अपने पहले नवजात पुत्र वसुमना को छोड़कर आने पर माधवी को उसका रूदन सुनायी देता है जो उसके मन की आवाज़ है। गालव का कहना कि ''बच्चे को भूल जाओ, माधवी। वह अब तुम्हारा कुछ नहीं लगता। अब उसके साथ

तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं रह गया है।''[10] माधवी का अपने पुत्र का स्मरण करना, गालव को कोरी भावुकता प्रतीत होती है, निश्चित ही कहीं न कहीं उसे यह आशंका भी सालती है कि कहीं माधवी संतान–प्रेम के कारण अपने कर्तव्य–पथ से विमुख न हो जाए और उसकी प्रतिज्ञा अधूरी ही रह जाए।

''पुरूष को भगवान ने धीर–गम्भीर बनाया है, पर स्त्री के स्वभाव में चंचलता होती है। इसीलिए कहा है कि नारी की चंचलता पर पुरूष का अंकुश सदा बने रहना चाहिए। इसमें अन्ततः स्त्री का ही लाभ है।''[11] पीढ़ी–दर–पीढ़ी यही विचार स्त्रियों को मिलता रहा है अपने बँधनों से मुक्त होने के लिए छटपटाहट क्यों ? ये बँधन ही तुम्हारे जीवन की प्राण–वायु हैं, अन्यथा तुम्हारा अस्तित्व दम तोड़ देगा। गालव ने अपनी प्रतिज्ञा को पूरी करने के लिए माधवी की देह को माध्यम बनाया, हर बार वह टूटती पर फिर से स्वयं को समेटकर उठ खड़ी होती। नाटक में सभी प्रमुख पात्र अपने –अपने स्वार्थों में आबद्ध हैं लेकिन तथाकथित सभ्य समाज के शिक्षित, सम्पन्न ये पुरूष इसे विभिन्न नामों के आवरण में आवेष्टित कर प्रस्तुत करते हैं। ययाति के लिए यह धर्म है तो गालव के लिए गुरू के प्रतिष्ठा, तीनों राजा अपने राज्य के उत्तराधिकारियों के लिए लालायित हैं, यहाँ तक कि विश्वामित्र भी माधवी के समक्ष स्वीकारते हैं–''मैं गालव का दम्भ तोड़ना चाहता था, तुमने मेरा दम्भ तोड़ दिया।''[12] माधवी स्वयं को छला हुआ अनुभव करती है उसे सोपान बनाकर गालव एक योग्य शिष्य व साधक बन गया, ययाति को अपनी पुत्री से अधिक आकांक्षित यश मिला और सभी राजाओं को ऐसे पुत्र जो भविष्य में चक्रवर्ती राजा बनकर उनका यशवर्धन करेंगे और माधवी–प्रेम व मातृत्व विहीना स्त्री, जिसे भय है कि स्वयंवर में अपनी संतानों को देखकर वह विचलित न हो जाए ''.....तीनों राजा मेरे बच्चों को साथ लेकर यहाँ पहुँच गये हैं। जैसे मछली पकड़ने के लिए काँटे में छोटी मछली लगा दी जाती है, वे मेर बच्चों को मेरे सामने लाकर मुझे प्रलोभन देंगे।''[13]

माधवी का जीवन एक विडम्बना है, अपने पिता के वचन का मान रखते हुए वह अपना कर्तव्य निभाती है किन्तु उसे यह भी अधिकार नहीं कि वह अपनी भावनाएं भी प्रकट कर सके। अपनी संतान के प्रति ममत्वपूर्ण शब्दों का जब वह प्रयोग करती है तो महान शिष्य गालव का वक्तव्य कि स्त्रियों में किसी बड़े कार्य के दायित्व के वहन की क्षमता नहीं होती। स्त्रियाँ स्वयं को होम कर, समाज की नींव तैयार करने में अपना योगदान देती हैं लेकिन उन्हें इसका श्रेय न देकर, उनके व्यक्तित्व को कमतर आँकने का प्रयास किया जाता रहा है। ''स्त्री पर एक और दमनचक्र मनोवैज्ञानिक रूप में चलता है। यहाँ स्त्री को पुरूष के बराबर दर्जा नहीं दिया जाता है आर उसे पुरूष से निम्न, अवरकोटिक समझा जाता है, क्योंकि उसे पुरूष का शरीर और मस्तिष्क प्राप्त नहीं है। इस दमनपरक ग्रंथि का नाम पितृसत्तात्मकता (Patriarchy) है।''[14] यानि कि अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु समाज, स्त्री का प्रयोग करता है, फिर चाहे उसकी भावनाएँ, संवेदनाएँ कितनी भी आहत क्यों न हों। कभी वह उसकी सीमाएँ, स्त्री को उसके कर्तव्य बताकर रेखांकित करता है तो कभी देवी–रूप में महिमा मण्डित करके। परन्तु कर्तव्य–निर्वहन के बाद स्त्री को संवेदनशीलता के कारण, इस प्रकार पुरस्कृत किया जाता है कि वे किसी बड़े कार्य का दायित्व वहन नहीं कर सकतीं और वह भी तब जब उस पर अन्य व्यक्तियों के कर्तव्यों का भार रख दिया गया हो–'' एक कर्तव्य मेरे पिता का, एक कर्तव्य मुनिकुमार शालब का; दोनों के कर्तव्य मेरे माध्यम से पूरे हो रहे हैं। फिर भी मैं दुर्बल हूँ, कर्तव्यपरायण वही हैं। पिता ने मुझ सौंपकर अपना कर्तव्य निभा दिया, और मुनिकुमार ने घोड़े बटोरकर अपना कर्तव्य पूरा कर दिया। एक दानवीर बन गया, दूसरा आदर्श शिष्य। और माधवी ? मोह की मारी माधवी कर्तव्य से गिर गयी। वह किसी बड़े काम का दायित्व वहन नहीं कर सकती।''[15] इसके बाद कटु होने पर तथाकथित सभ्य समाज, उससे शिष्टता–पालन करने की अपेक्षा भी रखता है। लांछन उसी पर लगेगा, माधवी का गालव से यह कहना कि ''संसार तुम्हें ही तपस्वी और साधक कहेगा, मेरे पिता को दानवीर कहेगा, और मुझे ? चंचल वृत्ति की नारी, जिसका विश्वास नहीं किया जा सकता।''[16] यह मात्र माधवी की पीड़ा नहीं वरन् प्रश्न चिह्न है समाज पर कि वह कितना स्वार्थी और कृतघ्न हो सकता है।

सभ्यता, विचार, कर्तव्य, संवेदना के एक छोर पर माधवी तो दूसरे छोर पर गालव दिखायी देता है; ययाति, हर्यश्च, दिवोदास, उशीनर, विश्वामित्र भी इन्हीं के मध्य में हैं। संवेदनशील, समर्पित माधवी अपने कर्तव्य का पालन करने को विवश है, कारण कोई भी हो–पिता, प्रेमी, दोनों ही या फिर उसके संस्कार। गालव अहंकारी, आत्ममुग्ध व्यक्तित्व है। माधवी और गालव एक–दूसरे के बरअक्स होते हुए भी समान उद्देश्य की पूर्ति हेतु जुड़े हुए हैं।

यह नाटक कई अनुत्तरित प्रश्न प्रस्तुत कर देता है जिनके उत्तर खोजना आवश्यक है। यह समाधान नहीं प्रस्तुत करता अपितु चिंतनपूर्ण उर्वर मेधाओं में कुछ विचार–बीज रोपता है। माधवी के भावुक होने पर उसे कर्तव्य पूरा करने की सलाह देना, शिष्टतापूर्ण शब्दों का प्रयोग करने की बात करना लेकिन जब भी ऐसा अनुभव हो कि गालव की प्रतिज्ञा अधूरी रह जायेगी, माधवी को उसके दुर्बल होने का अनुभव करवाना–ये सब कृत्य समाज के दोहरे चरित्र को उजागर करते हैं। एक स्त्री की परिधि निश्चित करने का अधिकार यह तो कदापि नहीं हो सकता कि अपने ऊपर थोपे गये कर्तव्यों के पालन में यदि वह शिथिल हो जाए तो उसे दुर्बल या पथभ्रष्टा ठहरा दिया जाये और कर्तव्यां को पूर्ण कर ले तो उसे महान होने का तमगा थमा दिया जाए। हमारा समाज उसे स्त्री के खाँचे में देखने की बजाय एक मनुष्य के रूप में स्वीकार क्यों नहीं कर पाता ? ''स्त्री जब अपने समानाधिकारों और लोकतांत्रिक वैज्ञानिक नज़रिए की अनिवार्यता पर जिरह करती है या बदलाव की क्रांतिकारी मुहिम छेड़ती है तो उसके रास्ते में तमाम बाधाएँ खडी की जाती हैं। बार–बार भारतीय संस्कृति, परंपरा, धर्म, नैतिकता और सनातन मूल्यों की दुहाई देकर उसके बढ़ते कदमों को रोका जाता है।''[17]

माधवी एक मिथकीय चरित्र मात्र नहीं वह पूर्णतः प्रासंगिक है। एक स्त्री पर निरन्तर बढ़ते उत्तरदायित्वों का भार–वहन करने का दबाव, उसे स्वयं के बारे में सोचने का अवकाश ही नहीं देता। हमारा 'सभ्य' होता समाज व्यक्तिवादी होता गया– अपना स्वार्थ सिद्धि में दूसरों की संवेदनाओं को आघात पहुँचाना, कोमलता को कमजोरी मानना; हमें सभ्यता की विकास–यात्रा में अधिक मानवीय होना था न कि यांत्रिक। ''जिन हालात में हमें दुखी, उदास और संवेदनशील होना था, सभ्यता ने हमें खुश रहने, और उनसे जुड़ी संवेदनाओं और स्मृतियों से खाली हो जाने का पर्याप्त अभ्यास कराया। और अब, हमारा सभ्य होना ही हमारे दुख का सबसे बड़ा कारण बन गया।''[18] मनुष्य को यह समझना होगा कि संवेदनशीलता गुण है, दुर्बलता नहीं। हमारी कर्तव्य–निष्ठा, किसी मनुष्य की भावनाआं अस्मिता व जीवन से ऊपर नहीं हो सकती।

संदर्भः–

1. भीष्म साहनी–माधवी, पृष्ठ सं0 94
   राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1984
2. वही '' '' पृ0सं0 19
3. वही '' '' पृ0सं0 13
   ''प्रशंसा से राजा को अपार सुख मिलता है।''
4. वही '' '' पृ0सं0 13
5. वही '' '' पृ0सं0 20
6. वही '' '' पृ0सं0 23
7. वही '' '' पृ0सं0 41
8. वही '' '' पृ0सं0 29
9. वही '' '' पृ0सं0 61
10. वही '' '' पृ0सं0 50
11. वही '' '' पृ0सं0 75
12. वही '' '' पृ0सं0 81
13. वही '' '' पृ0सं0 93
14. पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु'–(उत्तर–आधुनिकताः स्त्रीवादी संदर्भ)
    उत्तर–आधुनिकताः बहुआयामी संदर्भ, पृ0सं0 235

लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2010

15. भीष्म साहनी–माधवी, पृ0सं0 54–55
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1984वही '' '' पृ0सं0 93

16. रजनी गुप्त, कथाक्रम, वर्ष–8, अंक–33, पृ0सं0 3

17. भवन्स नवनीत; भारतोय विद्या भवन, मुंबई, मई 2021